WISHING YOU A PEACEFUL *UTTARAYAN*

from

DELHI PUBLIC SCHOOL TAPI & *PRAYAS*

एक अपंग शांतिदूत का अनुरोध

विशाल और मुक्त आकाश में उड़ना ,शुद्ध हवा से बातें करना और धरती माँ की सुंदरता का साक्षी होने का सौभाग्य केवल पक्षियों को ही मिला है।मेरे सारे उड़ने वाले दोस्तों में से मैं ही सबसे तेज़ और अच्छा हूँ ।मेरे परिवार में मेरी पत्नी और मेरे तीन बच्चे हैं।बच्चों के लिए खाना इकट्ठा करने के लिए मैं रोज बहुत दूर तक उड़ता हुआ शहरों में जाता हूँ।सूरत के एक शांतिप्रिय जवाहरलाल नेहरू उद्यान में मेरा प्यारा सा घोंसला है।हम अपनी खुशियों पर काबू नहीं रख सके जब हमने अपने छोटे बच्चों के शरीर पर पंख उगते हुए देखे।मैं और मेरी पत्नी पूरा दिन बच्चों के लिए खाना इकट्ठा करने और खिलाने में बिताते थे।हमारी आँखों में आँसू आ गए जब हमने पहली बार अपने बच्चों को पंख फैलाते व फड़फड़ाते हुए देखा।अपनी आँखों में आशा लिए और अपने पंखों को उत्साह से भरकर मैं ताप्ती नदी के किनारे उड़ने लगा।

आज शहर का वातावरण कुछ बदला हुआ था। यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि रोज़ इन छतों पर हमारा ही राज रहता था।मैंने देखा कि लोग ढेर सारा खाना और संगीत के विभिन्न साधनों के साथ वहाँ उपस्थित हैं।जैसे-जैसे शोर और तेज गानों की आवाज़ बढ़ती जा रही थी हमारा समुदाय भ्रमित और विचलित हो रहा था।ऐसा लग रहा था मानो हम पर बिजली की सेना ने आक्रमण कर दिया है।ऐसे नुकीले धागे जो काँच के टुकड़ों से बनाए जाते हैं सभी जगहों पर बिखरे पड़े थे ।बिना पंखों वाली पतंगें पूरे आकाश पर मंडरा रही थीं जिससे हमारा समुदाय उसमें फँसता चला जा रहा था।इसी तरह का भयावह दृश्य सभी जगहों पर दिखाई दे रहा था।वह धागा इतना नुकीला था कि मेरे एक साथी के पंख बुरी तरह से कट गए और शरीर से अलग हो गए।कुछ ही समय में उसका खून से लथपथ शरीर ज़मीन पर गिरा और वह मर गया।

मेरे सारे साथी और मैं डर से काँप रहे थे।डर के साथ सभी लोगों ने इधर-उधर उड़ना शुरू कर दिया लेकिन आकाश उन नुकीले धागों से भरा पड़ा था और उनसे बच पाना मुश्किल था।एक ओर तो पक्षियों के साथ यह दुर्घटना घट रही थी और दूसरी ओर लोग खुशी से चिल्ला रहे थे (काप्यो छे)।मैंने अपना सारा साहस इकट्ठा किया और घर के बारे में सोचा। ईश्वर को याद करते हुए मैं घर की तरफ लौटा।किसी तरह इन जानलेवा धागों से अपने आप को बचाते हुए मैं ताप्ती नदी के किनारे जा पहुँचा ।मैं अभी थोड़ा सुस्ता ही रहा था कि मुझे नीचे दिखाई दिया कि

मेरे बगुले भाई जिनके शरीर खून से सने थे नदी में पड़े थे और उनके खून से नदी का पानी भी लाल हो गया था।मैं पूरी तरह से टूट चुका था और मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य था घर सुरक्षित लौटना।

बहुत सावधानी के साथ उड़ते हुए आख़िरकार मैं जवाहरलाल नेहरू उद्यान तक पहुँच ही गया और मैंने अपने पंखों में कुछ ताकत का अनुभव किया।बड़ी ही सावधानी के साथ मैं अपने घोंसले की ओर मुड़ा।दो पेड़ों के बीच से उड़ रहा था कि अचानक मेरे पैर किसी चीज़ में फँस गए और मुझे एक झटका लगा।जब मैंने देखा तो वह एक सुनहरे रंग का धागा था।मैं बहुत डर गया और मैंने अपने पंखों को दोगुनी ताकत से फड़फड़ाना शुरू किया जिससे मैं वह धागा तोड़कर भाग सकूँ।उस धागे से निकलने की बजाय मेरा पूरा पैर उसमें बुरी तरह फँस चुका था मेरा पूरा शरीर उसमें उलझ गया था और मैं किसी एक पेड़ पर जा गिरा।जब मैंने अपनी आँखें खोली तो मैं अस्पताल में था ।मेरे पंखों पर पट्टी लगी थी और मेरा खून सूखकर मेरे कंधों पर जम चुका था। दर्द असहनीय था, मैं रो रहा था और अपने परिवार को याद कर रहा था किंतु मैं उड़ नहीं सकता था।

तभी दो आदमी आए और मैंने उन्हें कहते सुना कि-'एक आदमी जो रोज़ सुबह घूमने जाता है उसने मुझे जवाहरलाल नेहरू उद्यान में किसी पेड़ की शाखा पर लटके हुए देखा तभी उसने प्रयास को फोन किया और उसके सदस्य फायर ब्रिगेड और लम्बी सीढ़ी लेकर आए और मुझे बचाया।लेकिन सीधे कंधे की हड्डी को काटना पड़ा । मुझे पूरी तरह से ठीक होने में दो महीने लगेंगे लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि मैं तब भी नहीं उड़ सकूँगा।'मेरा पूरा जीवन नरक बन चुका था। मैं इस 'आदमी' को कैसे समझूँ ? एक मारता है और दूसरा बचाता है।और मैं इन आदमियों को कैसे समझाऊँ कि एक पक्षी के लिए उसके पंख उसकी ज़िंदगी होते हैं?

मेरा दिल दुख से भर गया था और मैंने अस्पताल में रहना शुरू कर दिया था क्योंकि मझे अस्पताल में अच्छा खाना और चिकित्सकीय सुविधाएँ मिल रहीं थीं जिससे मेरे घाव जल्दी भरना शुरू हो गए थे लेकिन मैं उस दर्द से कभी छुटकारा नहीं पा सकता कि मैं उड़ नहीं पाऊँगा और कौन सी दवा है जो मेरे परिवार से मेरे इस अलगाव को दूर कर पाएगी? और एक बार फिर प्रयास के दल ने उतरायण के दिन पक्षियों को बचाने का काम शुरू कर दिया।

इस अवसर पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि " अगर ऐसा हुआ कि आपको कोई एक और फोन जवाहरलाल नेहरू उद्यान से आता है तो एक बार मेरे घोंसले में झाँक लेना कि वह मेरी पत्नी और मेरे तीन बच्चे तो नहीं?"